षडंगपानीय : औषधीय महत्व

डॉ. बबलू पटेल*, डॉ. मनोहर राम**, डॉ. रामनिहोर तपसी जैस्वाल***

सार-

आयुर्वेद शास्त्र एक प्राचीनतम शास्त्र है। तथा आयुर्वेद में वर्णित अनेक चिकित्सीय योगों में से षडंगपानीय भी आयुर्वेद में वर्णित शास्त्रीय योग है। इस योग का प्रयोग करते हुयें मनुष्य स्वस्थ जीवनशैली का उपभोग करता है। षडंगपानीय मे वर्णित द्रव्य मुस्तक, पर्पटक, उशीर, चंदन, उदीच्य, नागर आदि द्रव्यों को छोटे-छोटे टुकड़े कर कूट-पीस कर जल में क्वाथ विधि से पाक करना चाहिए। पूर्ण रूप से पक जाने पर श्वांगशीत होने देते हैं। इसी जल को श्रृतशीत भी कहते हैं इस प्रकार निर्मित जल के प्रयोग से ज्वर तथा इस जल के सेवन से मन्द हुई जठराग्नि तीव्र हो जाती हैं। तथा आम का पाचन भलीभांति प्रकार से हो जाता हैं। इस षडंगपानीय का जो भी व्यक्ति विशेष नित्य दिनचर्या में उपयोग करता है। वह अरूचि,अपच जैसी बीमारियों से मुक्त रहता है।

कूट शब्द (keyword) :- षडंगपानीय, घटक द्रव्य, आम

Conflict of Interest: Non Ethical Clearance : N/A

प्रस्तावना-

षडंगपानीय एक बहुत अच्छी तथा शुद्ध आयुर्वेदिक द्रव्यों से निर्मित कल्पना है। जिसे हम घर में बना सकते हैं तथा लाभ उठा सकते हैं। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में बहुत व्यस्त होने के कारण अपनी सेहत का ध्यान नहीं दे पाता है और उसकी दिनचर्या प्रभावित होती जाती है। जिससे वह बदलते मौसम के कारण अनेक प्रकार के रोग जैसे- ज्वर प्रतिश्याय आदि रोगों से ग्रस्त हो जाता है।

Ingredients & composition (घटक द्रव्य) :-

आचार्य चरक अनुसार-

मुस्तापर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः।
श्रृतशीतं जलं दघात् पिपासाज्वरशान्तये।।[2] (च.चि.3/145)

---

* एम. डी. स्नातकोत्तर छात्र (वाचस्पति) संहिता एवं सिद्धांत विभाग राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी २२१००२, Mob. No. 8370092236, email.id - bablupatel919@gmail.com

** एम. डी. (आयु.), रीडर /विभागाध्यÕ राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी २२१००२

*** प्रवक्ता, एम. डी., संहिता एवं सिद्धांत विभाग, एम. ए. (संस्कृत) राजकीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी २२१००२

मुस्तक, पित्तपापडा,खश,रक्तचंदन, सुगंधबाला और शुंठी इन द्रव्यों से सिद्ध किया जल शीतल हो जाने पर प्यास और ज्वर की शान्ति के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए।

भैषज्य रत्नावली अनुसार -

मुस्तपर्पटकोशीरचंदनोदीच्यनागरैः।

श्रृतशीतं जलं देयं पिपासाज्वरशान्तये।।[6] (भै॰र॰5/26)

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खश, लालचंदन, सुगंधबाला, सोंठ ये सब मिलाकर २ कर्ष तथा जल १ प्रस्थ डालकर चूल्हे पर चढ़ा दें आधा जल शेष रह जाय तब छानकर शीतल करके मिट्टी के पात्र में भरकर रख दें। इससे प्यास और ज्वर दोनों धीरे धीरे दूर हो जाते हैं।

शाङ्र्गधर संहिता अनुसार -

उशीरपर्पटोदीच्यमुस्तनागरचन्दनैः।

जलं श्रृतं हिमं पेयं पिपासाज्वरनाशनम्।।[5] (शा॰स॰ मघ्यम खण्ड 2 /160)

खश,पित्तपापडा, मोथा,सोंठ, लालचंदन,मिलित १ कर्ष लेकर ६४ तोला जल में पकाकर आधा शेष रहने पर उतार लेतें हैं, इसे ठंडा करके पीने से ज्वर और प्यास शान्त होता है यह षडंगपानीय है।

औषधि द्रव्य (Herbs)	मात्रा (Quantity)	प्रयोज्यांग (part used)
1. मुस्तक (मोथा) *(Cyperus rotundus)*	एक भाग	कंद
2. पर्पटक (पित्तपापड़ा) (*Fumaria vaillantti*)	एक भाग	पञ्चांग
3. उशीर (खश) *(Vetiveria zizanioides*)	एक भाग	मूल
4. चंदन (लाल चंदन) *(Pterocarpus santalinus*)	एक भाग	कांड सार
5. उदीच्य (सुगंधवाला) (*Pavonia odorata*)	एक भाग	पञ्चांग
6. नागर (शुण्ठी) (*Zingiber officinale*)	एक भाग	कंद

❖ उपरोक्त सभी द्रव्यों को समान भाग बराबर मात्रा में लेकर षडंगपानीय का निर्माण करते हैं।

1. मुस्तक-

कुल- Cyperaceae

नाम- Cyperus rotundus

गुण-

गुण- लघु, रूक्ष

रस- तिक्त,कटु,कषाय

विपाक- कटु

वीर्य- शीत

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक[11]

2. पर्पटक -

कुल- Fumariaceae

नाम- Fumaria vaillantti

गुण-

गुण- लघु

रस- तिक्त

विपाक- शीत

वीर्य- कटु

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक[9]

3. उशीर-

कुल- Graminae

नाम- Vetiveria zizanioidis

गुण-

गुण- रुक्ष लघु

रस- तिक्त मधुर

विपाक-कटु

वीर्य- शीत

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक[10]

4. चंदन-

कुल-Leguminosae

नाम-Pterocarpus santalinus

गुण-

गुण- गुरु, रुक्ष

रस- तिक्त, मधुर

विपाक- कटु

वीर्य- शीत

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक[7]

5. उदीच्य-

कुल - Malvaceae

नाम - Paronia odorata

गुण-

गुण- रूक्ष, लघु

रस- तिक्त, मधुर

विपाक- कटु

वीर्य- शीत(अनुष्ण)

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक

6. नागर-

कुल- Zingiberaceae

नाम- Zingiber officinale

गुण-

गुण- लघु, स्निग्ध

रस-कटु

विपाक- मधुर

वीर्य- उष्ण

दोष प्रयोग- कफपित्त जन्य विकार नाशक[8]

बनाने की विधि-

- उपरोक्त सभी द्रव्यों को समान मात्रा में साफ करके मोटा चूर्ण कर लें।
- फिर जितना मोटा चूर्ण बनता है, उसका 64 गुना पानी लेकर उसको किसी पात्र में डालकर चूल्हे की मंदाग्नि (धीमी आंच) पर उबालना है।
- इसको तब तक उबालते रहे जब तक उसका आधा भाग शेष बचे।
- आधा भाग बचने के बाद इसे छानकर किसी साफ पात्र में सुरक्षित/संरक्षित करके रख लें। इस तरह षडंगपानीय बन जाता है।

लाभ –

- चंदन पित्तज्वर,तीव्र ज्वर, एवं जीर्ण ज्वर में चंदन के प्रयोग से दाह एवं तृषा की शान्ति होती है तथा स्वेद उत्पन्न होकर ज्वर भी कम होता है। ज्वर के कारण हृदय पर भी जो विषैला परिणाम होता है वह भी इसके प्रयोग से नहीं होता।[15]
- शुंठी सामान्य एवं सन्निपात ज्वरो में अदरख का रस अनुपान के रूप में दिया जाता है। शुंठी चूर्ण विषम एवं जीर्ण ज्वरों में लाभकर है।[12]
- मुस्ता तिक्त रस होने के कारण दीपन,पाचन, ग्राही, तृष्णा निग्रहण और कृमिघ्न है।[14]
- उशीर तिक्त रस होने के कारण दीपन,पाचन, और शीत होने के कारण तृष्णा निग्रहण है।[13]
- उशीर तिक्त और स्वेद जनन होने से ज्वरघ्न है।[13]

क्रिया विधि-

षडंगपानीय बनाते समय उपर्युक्त द्रव्यों में जीवाणु प्रतिरोधी क्षमता विषघ्न, कृमिघ्न, शीतगुण, दीपन, पाचन आदि विशेषता होने के कारण यह शरीर की जठराग्नि को तीव्र करके आम का पाचन शीघ्र ही करता है। तथा शारीरिक विषाक्तता को दूर करता है। जिससे मनुष्य जल्द ही स्वस्थ हो जाता है।

मात्रा तथा सेवन सेवन विधि-

- इस प्रकार निर्मित षडंनपानीय आवश्यकतानुसार 30ml से 40ml तक ले सकते हैं ।
- इस औषधि का प्रयोग आवश्यकतानुसार दिन में दो से तीन बार प्रयोग कर सकते हैं।

आमरस उत्पत्ति तथा रोग उत्पादकता -

विरुद्ध, मिथ्या, अशुचि, दुष्ट भोजन, अध्यशन, अजीर्ण, भोजन[4]

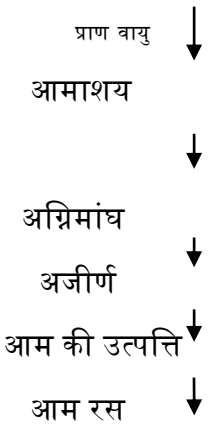

आम का सामान्य अर्थ बिना पका हुआ या कच्चा, अपक्व,अपचित और अजीर्ण होता है यह अवस्था अग्नि के अपूर्ण कार्य के परिणाम स्वरूप होती है।जठराग्नि तथा धात्वाग्नि मंदता के कारण अन्न तथा रस नामक धातु का ठीक से परिपाक न होने पर जो अपक्व आम रस बनता है उसे आम कहते है। यह आम शरीर में समस्त दोषों के प्रकोप का कारण है।[16]

आम पाचन व्यवस्था-

संपूर्ण शरीर में व्याप्त आमदोषों का संशोधन द्वारा निर्हरण नहीं करना चाहिए, क्योंकि आम से मिश्रित दोष, रसादि धातुओं में लीन होकर संपूर्ण शरीर में व्याप्त रहते हैं जिससे दोषों की बाहर निकलने की प्रवृत्ति भी नहीं होती है। यदि इन दोषों को बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है, तो इस प्रयत्न से दोषों के आश्रय रूपी शरीर का नाश हो जाता है। इसलिए आम दोष के निवारण हेतु दीपन, पाचन वातानुलोमन, तृष्णा नाशक, अरुचि, अग्निमान्ध नाशक इत्यादि द्रव्यों के द्वारा आमदोष का पाचन कराकर बल के अनुसार यथोक्त द्रव्यों के }kjk शोधन कर दोषों को शरीर से बाहर निकालना चाहिए। दोषों के अनुसार आम के क्षय होने तक कोई स्तंभन औषधियां नहीं देनी चाहिए। इस प्रकार आम दोषों की विविध पाचन औषधियों द्वारा चिकित्सा करनी चाहिए अथवा पाचन उपरांत शोधन करना चाहिए।

संभाषा-

निर्मित षडंगपानीय का उपयोग करने से व्यक्ति विशेष को स्वास्थ्य लाभ होता हैं। तथा नित्य दिनचर्या में प्रयोग करने से शरीर में उपस्थित आमविष तथा हानिकारक पदार्थ निकल जाते हैं। तथा

आम का पाचन करके जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला होता है। शारीर की कान्ति बढ़ाने वाला होता है। ज्वर के कारण जो पिपासा से रोगी पीडित होता हैं। तो पिपासा रोग को भी दूर करने वाला होता हैं। तथा यह षडंगपानीय आयुर्वेद कें प्रयोजन को सिद्ध करता हैं -

"स्वास्थ्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च"।[1] (च. सू. 30/26)

इस तरह से इस षडंगपानीय का प्रयोग करने से यह रोगों को दूर करता हैं तथा स्वास्थ की रक्षा करने में भी लाभकारी होता हैं ।

निष्कर्ष-

आज की जीवनशैली को देखते हुए जिनमे मनुष्य अपने आहार विहार को नियमित रूप से उपभोग नहीं कर पा रहा है जिससे वह थोड़े समय में ही अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जा रहा है क्योंकि मिथ्या,विषम,अनुचित रूप से आहार के प्रयोग से जठराग्नि मन्द हो जाती है। जठराग्नि के मन्द होने सें अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है।

जैसा कि कहा गया हैं-

"रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ"।[3] (अ.हृ.नि.12/1)

इस अवस्था में यदि षडंगपानीय का प्रयोग करते हैं तो यह जठराग्नि वर्धक तथा आम पाचक है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. चरक संहिता- श्री पंडित काशीनाथ शास्त्री प्रथम भाग चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी पृष्ठ संख्या-587
2. चरक संहिता- श्री पंडित काशीनाथ शास्त्री द्वितीय भाग चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी पृष्ठ संख्या-135
3. अष्टांग हृदय- प्रो. प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी पृष्ठ संख्या-513
4. अष्टांग हृदय- प्रो. रविदत्त त्रिपाठी चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान पृष्ठ संख्या-147
5. शारंधर संहिता- डॉ. श्रीमती शैलजा श्रीवास्तव मध्यम खण्ड चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी द्वितीय अध्याय, पृष्ठ संख्या-159
6. भैषज्य रत्नावली- कविराज श्री अम्बिका दत्त शास्त्री चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी पृष्ठ संख्या-46
7. द्रव्यगुण विज्ञान- आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-715

8. द्रव्यगुण विज्ञान- आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-331
9. द्रव्यगुणविज्ञान- आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-320
10. द्रव्यगुणविज्ञान- आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-114
11. द्रव्यगुणविज्ञान-आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-370
12. द्रव्यगुणविज्ञान-आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-334
13. द्रव्यगुणविज्ञान-आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-115
14. द्रव्यगुणविज्ञान-आचार्य प्रियवृत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी पृष्ठ संख्या-371
15. भावप्रकाश- गंगा सहाय पांडेय कृष्ण चन्द्र चुनेकर चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी पृष्ठ संख्या-187
16. आयुर्वेदीय रोग विज्ञान एवं विकृति विज्ञान- डॉ राधावल्लभ सती चौखम्भा ओरियन्टालिया वाराणसी पृष्ठ संख्या-232

❍

APPEAL

All the life members who had already paid Rs. 5000.00 as Life Membership fee are requested to send a D.D. of Rs. 5000.00 in favor of A.A.I.M. payable at Varanasi for purchase of Land of office of Association (C.C.) at Varanasi. The members who will donate Rs. 10001.00 or more will be presented a certificate and their name will be published in the Journal with their Photographs.

Sangyaharan Shodh **is available at our website and can be downloaded from website : http// www.aaim.co.in**